International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(III), April- June, 2025, pp. 115-121

गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य में लोकप्रियता का तत्व

डॉ. पुनीता कुमारी*

सहायक व्याख्याता, हिंदी विभाग, ब्राइटमून, गर्ल्स पी.जी. महाविद्यालय, गोविन्दगढ़, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: punitakumari_hindi@yahoo.com

सार

साहित्य की किसी विधा के साथ जब 'लोकप्रिय' शब्द जुड़ता है,तो उसका सीधा–सीधा संबंध एक व्यापक जनसमुदाय के साथ जुड़ने से होता है। किसी साहित्यकार की विचारधारा व्यापक जन समुदाय के साथ जुड़कर ही समाज में युगों–युगों तक अजर–अमर रहती है। 'लोकप्रियता' के इस बिंदु का आधार लोक मानस की अभिरुचियों और इच्छाओं के साथ–साथ समाज की शाश्वत पृष्ठभूमि और उसकी परिवर्तनगामी परिस्थितियों भी होती है ।इस दृष्टि से किसी साहित्य या साहित्यकार की लोकप्रियता को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ही परखा और समझा जा सकता है। उत्तरछायावादी कवि, मंचों के बेताज बादशाह, 'नेपाली' जी की लोकप्रियता के अनेक महत्वपूर्ण बिंदु रहे हैं, जिन्हें उनके काव्य को पढ़कर और समझकर ज्ञात होता है किकृ उनका काव्य जनमानस के पटल पर अपनी अमिट छाप किसी एक या दो कारण से नहीं, वरन् ऐसे अनेक महत्वपूर्ण बिंदू हैं, जो उनकी काव्य– यात्रा को लोकप्रियता के परचम तक लाने में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं । इस शोध – पत्र में उन महत्वपूर्ण बिंदुओं को खोजने और स्पष्ट करने का एक प्रयास किया गया है। जिसमें उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति के अनेक ऐसे गुण हैं, यथा – सरलता, सहजता, भाव प्रवीणता, गेयात्मकता आदि जिनकी उपस्थिति 'नेपाली' – काव्य को मानस – पटल पर अमर एवं लोकप्रिय बनाएं हुए है। यहां उन्हीं बिंदुओं को विस्तारपूर्वक उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

शब्दकोशः *लोकप्रियता, गेयात्मकता, कालजयी प्रभाव, बाजारवाद, प्रासंगिकता।*

प्रस्तावना

गीतों के राजकुमार, कवि सम्मेलन सम्राट, वन मैन आर्मी, राष्ट्र के सजग प्रहरी एवं स्वाधीन कलम के धनी आदि अनगिनत विशेषणों से संबोधित तीन दशकों से अधिक उत्कृष्ट काव्य–साधना, अतुलनीय मंचीय लोकप्रियता, फिल्मों के लिए लिखे गए अनेकानेक प्रसिद्ध गीतों की रचना करने वाले की कालजयी लोकप्रियता का ही नाम है – गोपाल सिंह 'नेपाली'।

वस्तुतरू 'नेपाली' अपने समय में लोकप्रियता के शिखर पर रह चुके हैं। उनके समकालीन कवि भी उनकी लेखनी की प्रशंसा करते नहीं अगाहते । राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' उन्हें जनता का हृदयहार स्वीकारते हैं, तो आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री 'नेपाली' में पाश्चात्य कवि मिल्टन, शेली और किड्स का समाहार देखते हैं। कवि बच्चन के लिए हिंदी भारती की वीणा का एक तार है 'नेपाली', तो कुछ के लिए 'नेपाली' हिंदी का दूसरा कवि 'जगनिक' है । 'नेपाली' की कविताएं 1962 में भारत – चीन युद्ध के समय जन–जन की जुबान पर सुनाई देती है , तो उनके गीत भी भजनों के रूप में आज भी भक्त – हृदय पर अपनी अमिट छाप रखते हैं।

शोध –पद्धति

शोध – दृष्टि से यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि लोकप्रियता की दृष्टि से वह कौन से तत्व होते हैं, जो किसी कवि एवं उसके काव्य को लोकप्रिय बना, जन – जन का प्रिय, बना सदा – सदा के लिए अमर कर देते हैं । इन तथ्यों को वस्तुपरक ढंग से परखने के लिए ही इस विषय का चयन करके समाजशास्त्रीय पद्धति को आधार बना कार्य किया गया है। वस्तुतः साहित्य का समाजशास्त्र किसी कृति की अस्तित्व में आने के कारणों को विभिन्न बिंदुओं से मूल्यांकित करता है। अन्य आलोचनात्मक पद्धति की भांति कृति में किसी एक ही मूल्य की पड़ताल भर नहीं करता और न ही किसी एक कारण को प्रमुखता प्रदान करता है। यह अलग विषय है कि किसी रचना में किसी तत्व एवं मूल्य की मात्रा कम या अधिक हो सकती है।

लोकप्रिय साहित्य का अर्थ

'लोकप्रिय' शब्द विशेषण रूप में जब किसी साहित्य या किसी विधा से पूर्व प्रयुक्त होता है, तो उसके भीतर व्यापक जन –समुदाय (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ) समाविष्ट होता है। प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य के लिए 'जनप्रिय' शब्द प्रयोग किया जाता था। जिस साहित्य की अभिव्यक्ति में जन समुदाय अभिव्यक्ति पाता है, जनता की चितवृत्तियों का चिंतन होता है ।ऐसा साहित्य निश्चित ही जनता को रुचिकर लगता है।

'लोकप्रियता' को सर्वप्रथम सन 1657 में कोलिंस महोदय ने परिभाषित किया था।उनके द्वारा प्रस्तावित लोकप्रियता थी – "जिसमें कि व्यापक स्तर पर लोकप्रियता (पॉपुलरिटी) या समर्थन पाने के गुण मौजूद न हो। ''१

यहां 'लोकप्रियता' को सीधे–सीधे नकारात्मक प्रभाव या कहे कि त्रुटि माना गया है। जबकि मैनेजर पांडेय अपनी पुस्तक 'साहित्य की समाजशास्त्र की भूमिका' में लिखते हैं, "लोकप्रिय साहित्य की उपेक्षा का एक कारण अभिजनवादी दृष्टिकोण है जो हर प्रकार के लोकप्रिय साहित्य को असाहित्यिक, अशिष्ट, सतही, मनोरंजक और व्यवसायिक कहकर उसकी अपेक्षा करता है।''२

अतः मैनेजर पांडेय समस्त लोकप्रिय साहित्य को एक ही दृष्टि से नहीं देखते। वे लोकप्रिय साहित्य के सकारात्मक पक्ष को भी मान्यता देते हैं ।उक्त पंक्तियों में 'जो हर प्रकार के' शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह इसी ओर संकेत करता है कि – "गंभीर, साहित्यिक, शिष्ट, स्तरीय साहित्य भी लोकप्रिय साहित्य हो सकता है। वस्तुतः यह वह साहित्य होता है, जो जन – जीवन के यथार्थ के प्रस्तुतीकरण की श्रेष्ठता तथा भाषा की सरलता से सहज होकर बौद्धिक एवं सारगर्भित होता है। आदिकालीन और मध्यकालीन साहित्य में भी नकारात्मक अर्थ में लोकप्रिय साहित्य का प्रयोग कहीं दिखाई नहीं देता। तब लोकप्रिय साहित्य के लिए 'जनप्रिय साहित्य' शब्द का प्रयोग दिखाई देता है।३

वस्तुत; जिस साहित्य में लोक– तत्व, लोक– भाषा, लोक –गीत, लोक –मनोरंजन के साथ–साथ एक निश्चित उद्देश्य (जन –कल्याण) का भी समावेश होता है, वही साहित्य लोकप्रिय होता है, क्योंकि साहित्य की लोकप्रियता जनाधार पर ही केंद्रित होती है। यही कारण है कि गंभीर साहित्य की अपेक्षा लोकप्रिय साहित्य जनमानस के अधिक निकट होता है।

मैनेजर पांडेय 'लोकप्रिय साहित्य का स्वरूप' शीर्षक के अंतर्गत बाजारवाद से जुड़े लोकप्रिय साहित्य के विषय में लिखते हैं, "आज का लोकप्रिय साहित्य प्रकाशन के युग का साहित्य है, जिसका बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उत्पादन होता है। वह पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली की दूसरी वस्तुओं की तरह उत्पादित होकर बाज़ार के माध्यम से खरीद–बिक्री की वस्तु की तरह जनता तक पहुंचता है।''४

मैनेजर पांडेय के अनुसार 'बिकना' ही लोकप्रियता का द्योतक है। ऐसा साहित्य हितार्थ नहीं, लाभार्थ लिखा जाता है। किंतु वर्तमान में इस स्थिति में परिवर्तन आया है। छपाई के अविष्कार से लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। पाठक– वर्ग का उत्थान हुआ है, नयी–नयी विधाएं प्रकाश में आई हैं। साहित्यकार मानव –जाति, राष्ट्र के विकास, उत्थान एवं संतुष्टि के लिए साहित्य लिखने लगा है। अतः लोकप्रिय साहित्य की आधारभूत विशेषताओं को व्यापक अर्थ में समझने की आवश्यकता है।

लोकप्रिय कविता और 'नेपाली' काव्य में आधारभूत विशेषताएं

वर्तमान साहित्य – समाज में साहित्य की लोकप्रियता पर विचार करना इसलिए आवश्यक हो जाता है, क्योंकि लोकप्रिय साहित्य व्यापक रूप में जनसाधारण के मध्य अपनी जगह बना चुका है। साथ ही, साहित्य –जगत ने भी लोकप्रिय साहित्य के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है। लोकप्रिय साहित्य की पहचान आज साहित्य– जगत से होकर विश्व –पटल पर अंकित हो चुकी है। साहित्य में विद्यमान लोकप्रियता मात्र अधुनातन दृष्टिकोण का ही प्रतिफलन नहीं है, वरन् काव्य में लोकप्रियता का तत्व प्रारंभ से ही विद्यमान रहा है।

'काव्य की भूमिका' में कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' कविता को व्याख्यायित करते हुए लिखते हैं कि – "कविताओं का आदर सदैव एक ही मूल्य के कारण नहीं होता। जो कविता आज प्रासंगिकता के कारण पढ़ी जाती है, संभव है कल वह छंद के लिए पढ़ी जाए।"५

निरूसंदेह कविता सदैव एक ही दृष्टिकोण को लेकर नहीं पढ़ी जाती, उसका पाठक अलग युग का, अलग विचारधारा के, अलग–अलग व्यक्ति होते हैं, तो निश्चित ही विचारधारा बदलेगी तो उसे पढ़ने का नजरिया स्वत; ही बदलेगा। फिर भी कविता में कुछ शाश्वत तत्व निहित होते हैं; जो उसे लोकप्रिय बनाते हैं। जिनके कारण कविता अपना महत्व कभी नहीं खोती। वे तत्व जनसाधारण के मध्य आकर्षण का केंद्र बने रहते हैं, जो उस कविता को कालजयी बनाए रखते हैं। यह वही तत्व हैं जिनके कारण तुलसी की चौपाइयां, कबीर के दोहे, सूर के पद और मीरा की पद लोक – कंठों में आज तक सुरक्षित है तथा गायी और गुनगुनायी जाती है।

गोपाल सिंह 'नेपाली' ने रचनात्मक स्तर पर ऐसे शाश्वत विषयों को अपनी अनुभूति की प्रखरता से श्रृंगारित किया है, जो मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी होने के कारण कालजयी महत्व रखती हैं। 'नेपाली' ने अपने काव्य को प्रकृति, राष्ट्र और मानव –प्रेम की त्रिवेणी में प्रवाहमान किया। काव्य – विषय के प्रस्तुतीकरण का वैविध्य अत्यंत सहज, सटीक और लयात्मक ढंग से अभिव्यक्ति पाता है।' नेपाली' के काव्य का अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष बहुआयामी है। उनके काव्य का बहुआयामी होना ही उनकी लोकप्रियता का आधार है । उनकी लोकप्रियता काव्य में अनुभूति की प्रबलता एवं अभिव्यक्ति की सरलता का ही परिणाम कहीं जा सकती है। 'नेपाली' के काव्य का लोकप्रिय होने का एक माध्यम उनके द्वारा प्रयुक्त उनकी गीत विधा भी रही है । 'नेपाली' केंद्रित विशेषांक 'बिहार – परिषद् 'में संजय कुमार 'पंकज' नेपाली अर्जित लोकप्रियता को संदर्भित करते हुए लिखते हैं – "कोई रचनाकार लोकप्रिय भी हो और सार्थक भी, चर्चित हो और स्तरीय भी, जन–जन अभिरंजक हो और शास्त्रीय भी, स्पृहणीय हो और अनुकरणीय भी, ऐसा शायद ही होता है, होता भी है तो इक्का–दुक्का ही। हिंदी साहित्य के संपूर्ण विकास में गोपाल सिंह 'नेपाली' ऐसे ही इक्के – दुक्के के क्रम में विशिष्ट हैं।भीड़ के होकर भी भीड़ से अलग, सबके साथ होकर भी असंपृक्त, आम होकर भी खास।''६

किसी कवि के जीवन में लोकप्रियता की यह स्थिति तभी उपस्थित होती है, जब कवि का काव्य अपनी विषय वस्तु की सरलता एवं उपयोगिता तथा भाषा शैली की संप्रेषणीयता के कारण लोकप्रिय होता है । एक श्रेष्ठ कविता ही पाठक हृदय को झंकृत करने में समर्थ होती है। कवि 'दिनकर 'अपनी पुस्तक 'काव्य की भूमिका' में लिखते हैं; – "एक श्रेष्ठ कविता की पहचान यह है कि उसे पढ़कर मनुष्य के हृदय में एक प्रकार की बेचौनी या जागृति स्फुर्त होती है और उसका मन भीतर ही भीतर किसी यात्रा या पर्यटन पर निकल पड़ता है।''७ वस्तुतरू कविता का यह सरलीकृत रूप ही पाठक के सामने कविता को अपनी मानने के लिए विवश करता है। पाठक कवि के भावों के साथ बह निकले। कविता में यह स्थिति तभी संभव है, जब विषय प्रासंगिक, भाषा सरल एवं शैली सहज हो। 'नेपाली' की कविताओं में काव्य की यथार्थता, अपनत्व और भाषा की सरलता स्पष्ट देखी जा सकती है।

उक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए यदि गोपाल सिंह 'नेपाली' के काव्य की लोकप्रियता को परखा जाए तो उसमें भावात्मकता, गेयात्मकता, संप्रेषणीयता, संक्षिप्तता के साथ ही विषय–वैविध्य, सामयिकता तथा प्रासंगिकता आदि भी दृष्टिगोचर होते हैं। अतः उपर्युक्त तत्वों के आधार पर ही 'नेपाली' के काव्य में उपस्थित लोकप्रियता के तत्व वर्णित हैं –

विषय –वैविध्य– 'नेपाली' काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता उनके काव्य में उपस्थिति विषय वैविध्य है। उन्होंने किसी विषय– वस्तु में बंधकर काव्य – सृजन कभी नहीं किया। उन्होंने शाश्वत विषयों के साथ मानवीय संवेदनाओं से जुड़े कालजयी महत्ता वाले विषयों को प्रमुखता दी है। उनके काव्य में प्रकृति – प्रेम के अतिरिक्त मानव प्रेम एवं देश प्रेम की मुख्य धारा में रहे हैं 'पीपल' कविता में बड़ी ही सहजता से प्रकृति को मुखरितकिया गया है

"पीपल के पत्ते गोल–गोल
कुछ कहते रहते डोल – डोल।''८

उनके काव्य में जहां प्रकृति का सौंदर्य मुखरित है, वहीं प्राकृतिक आपदाओं का भी सजीव चित्रण हुआ है। इनमें बाढ़, सूखा, अकाल, भूकंप आदि हैं। 'डगमग बिहार' कविता में प्राकृतिक आपदा का चित्र बड़ी मार्मिकता के साथ किया गया है –

"सहसा आया भूकंप अभी
ओले सूखे की विपद कभी
जीवन के दो दिन इनमें भी
बस दुनिया – भर के दुख सभी।।''९

प्राकृतिक आपदाओं के साथ समाज में व्याप्त असंगत एवं परंपरागत रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों पर भी कुठाराघात किया गया है। इसके अंतर्गत समाज व राष्ट्र तो सर्वोपरि रहे हैं साथ ही समाज से संबंधित समस्याएं हो या मानवीय, राष्ट्रीय, प्रगतिशीलता, राष्ट्रीय भाषा का गौरव, कवि के लिए सभी का स्थान बराबर है। कवि स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत के साथ कविताओं में जुझता हुआ दिखाई देता है। गुलामी की पीड़ा, शोषण, अत्याचार, भाषा एवं विचार की स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर विचार, अव्यवस्थित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर स्वतंत्र अभिव्यक्ति कवि काव्य में हुई है। 'नेपाली' के लिए जितनी महत्वपूर्ण राष्ट्र की स्वतंत्रता थी उतनी ही उसकी प्रगति एवं स्वतंत्रता राष्ट्रभाषा की भी महत्वपूर्ण है। वे लिखते हैं –

'नादान नहीं थे हरिश्चंद्र,
मतिराम नहीं थे बुद्धिहीन,
जो कलम चलकर हिंदी में,
रचना करते थे नित नवीन,
इस भाषा में हर मीरा को,
मोहन की माला जपने दो,
हिंदी है भारत की बोली,
उसे अपने आप पनपनें दो।''१०

युगानुरूप लेखनी चलाकर भावों को निर्भीक अभिव्यक्ति देने वाले कवि हैं – 'नेपाली'। 'नेपाली' ने स्वतंत्रता, अहिंसा, राजनीतिक, धर्म तथा लोक – यथार्थ को भी काव्य की विषय वस्तु बनाया है। एक भविष्यदृष्टा की भांति काव्य – सृजनरत कवि ने सन् 1963 में होने वाले चीनी आक्रमण के आभास से युक्त कविता 'चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा' तथा 'इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो 'की रचना सन 1959 में ही कर दी थी ।उस समय में लिखी 'नेपाली' की रचनाएं आज भी यदि जन–जन के बीच पहुंचे तो निःसंदेह कवि–काव्य अपनी प्रासंगिकता से देश प्रेमियों में नवस्फुर्ति का संचार करेगा।

'नेपाली' अपने काव्य – जगत में न तो किसी विषय वस्तु से बंधें और न ही किसी शैली से और न ही साहित्य में प्रचलित किसी निश्चित परिपाटी में और न ही स्वयं को अभिव्यक्ति के लिए किसी निश्चित माध्यम

के क्षेत्र में बांधा ।वह मात्र जनवादी कवि बने, निज – हितार्थ त्याग, जन– जन के लिए काव्य सृजन करते रहें और यही कारण है कि 'नेपाली' काव्य में प्रकृति– सौंदर्य, राष्ट्र –प्रेम, क्रांति, आंचलिकता, ग्राम्यता, रहस्यात्मकता तथा भक्ति सभी उपस्थित है। यदि यह कहा जाए कि तत्कालीन समाज – संबंधी कोई ऐसा विषय नहीं है जिसे कवि – काव्य में उचित अभिव्यक्ति न मिली हो, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनके काव्य में प्रकृति से लेकर मानव, धरती से लेकर आकाश, पशु–पक्षी से लेकर ऊंचे पर्वत, प्रेम से लेकर विद्रोह हो तथा समाजव्यापी दुख– दैन्य से लेकर समानता के अधिकार तक सभी विषय समाहित है।

'नेपाली' काव्य में सामयिक विषयों पर गहन चिंतन कर उन्हें अभिव्यक्ति दी गई है ।उन्होंने गीत विधा की प्रासंगिकता, प्रचलित विभिन्न वादों पर भी लेखनी चलाई है। छंदहीन काव्य को प्रधानता दी जा रही थी, कविता की मौत की घोषणा हो रही थी । प्रयोगवाद के नाम पर जो काव्य रचा जा रहा था, उसी पर दृष्टिपात करते हुए नेपाली लिखते हैं –

"कविता के लिए गए जो मर
वे कवि कहते हैं चिल्लाकर
कविता का युग तो चला गुज़र
आया प्रयोग का शुभ अवसर।''११

'नेपाली' स्वयं गीत विधा के प्रबल समर्थक एवं समर्थ रचनाकार हैं। अतः छंदहीन काव्य के प्रति यह प्रतिकार स्वाभाविक ही था। वे गेयात्मकता को भारतीय काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। जहां प्रत्येक स्थिति गीतों में बंधी होती है। यह परंपरा वेदों से लेकर लोकगीतों तक में परिलक्षित होती है। इन भावों को काव्यगत करते हुए कभी लिखते हैं –

"यह गीतों का है देश जहां चरवाहा बिरहा गाता है
सुख हो, दुख हो, सौंदर्य यहां गीतों में गया जाता है।'१२

वस्तुतरू 'नेपाली' गेयात्मकता को ही काव्य का मूल तत्व स्वीकार करते हैं। वे लयहीन काव्य को नीरस मानते हैं तथा उसे काव्य ही स्वीकार नहीं करते कृ

"लाख चला अतुकांत गद्य लो, तुम कविता के भेष में
चल न सकेगा नीरस पद, तुलसी –मीरा के देश में।''१३

'नेपाली' मात्र गीतों का सृजन ही नहीं करते, वरन् उनका सस्वर पाठ करके उन्हें जन–मन तक पहुंचाते भी थे। गीतकार वीरेंद्र मिश्र उनकी गेयात्मकता के संदर्भ में लिखते हैं – "नेपाली जी की कविता और स्वर लहरी में नदी का –सा प्रवाह था, समुद्र का गर्जन –तर्जन नहीं। उनकी कवि कल्पना सीधी–सादी भाषा में ढलकर श्रोताओं के मन तक पहुंच रही थी ।मुझे लगा कि नेपाली जी में विषय और छंद का वैविध्य भी है और स्वर का आनंद भी।''१४ कवि के स्वर की इसी मधुरता ने उन्हें साहित्य– जगत से मंच तथा कवि–मंच से फिल्म– जगत तक प्रतिष्ठित किया।

'नेपाली' काव्य की प्रासंगिकता भी उन्हें युगों– युगों तक जनसामान्य का लोकप्रिय कवि बनाए रखती है। साहित्य जगत में लोकप्रियता प्राप्त करना जितना कठिन है, उससे अधिक कठिन उस लोकप्रियता को बनाए रखना है। प्रत्येक युग में लोकप्रियता के मानक युगीन परिस्थितियों की भांति ही परिवर्तित होते हैं। उसके आयाम परिवर्तित एवं विस्तृत होकर काव्य की स्थिति में परिवर्तन लाते हैं। किंतु कुछ ऐसे शाश्वत नियम भी होते हैं जो युगीन सीमाओं से परे कालजयी होते हैं। उन्हीं तत्वों को आधार बनाकर 'नेपाली' ने सीमातीत लोकप्रियता अर्जित की है। इसमें सामयिकता के साथ प्रासंगिकता महत्वपूर्ण तत्व है। युगों की सीमा को लांघकर प्रासंगिकता काव्य की महत्ता को बनाए रखती है। यह गुण 'नेपाली' काव्य में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। उनकी जनपक्षधरता ने उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाया हुआ है।

वर्तमान साहित्य का सर्वाधिक चर्चा– परिचर्चा का विषय 'स्त्री' कवि – काव्य में बहुत पहले ही अपनी संपूर्णता के साथ स्थान पाती है। 'बाबुल तुम बगिया के तरूवर' में नारी के जन्म से लेकर मृत्यु तक की यात्रा का जीवंत एवं हृदयग्राही वर्णन प्रस्तुत किया गया है। सामंतवादी संस्कार, वैषम्य, परंपरा के दंश, पुरातनपंथी सोच आदि विडंबनाओं को बड़ी ही सजीवता के साथ उजागर किया गया है। उन्होंने नारी के दीन–हीन रूप को अभिव्यक्ति देने के साथ नारी के स्वाभिमानी, स्वावलंबी एवं शक्ति युक्त रूप को भी उजागर किया है। 'भाई बहन' कविता में इसी भाव को उद्घाटित करते हुए नेपाली लिखते हैं–

"आज बसंती चोला तेरा, मैं भी सज लूं, लाल बनूं
तू भगिनी बन क्रांति करली, मैं भाई विकराल बनूं।''१५

इन सभी तत्वों के साथ एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है– सहजता एवं सरसता, जो 'नेपाली' काव्य में समाहित है। इसी के कारण काव्य में प्रभावात्मकता का गुण भी सरलता से प्रविष्ट हो जाता है। जिसके कारण कवि काव्य लोकप्रिय भी हुआ है। छायावाद की तत्सम प्रधान, दुरुहता युक्त शैली के पश्चात सरल – सहज भाषा ही कवि के भावों की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनी है। भावों के साथ जहां शैली चिंतन प्रधान हुई है वहां भी सरलता ने अपना साथ नहीं छोड़ा। काव्य में प्रयुक्त भाषा मधुरता, सरलता तथा प्रांजलता के गुण से सराबोर है ।यही 'नेपाली' के काव्य की विशेषता बन गई है। सीधे–सादे कवित्वपूर्ण लोक – शब्दों का बाहुल्य यथा कृ पसार, बयार, फुनगी, नन्हीं – नन्ही, सपना, छीलना, छंदों का उकसाना, फूल–चुग्गी, डोल–डोल, बोल–बोल आदि है। 'नेपाली' भाषा में यदा – कदा उर्दू शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिल जाता है। जो उनकी शैली में रवानगी लाता है। यह उनके कौशल का ही प्रभाव है कि तीखे से तीखे व्यंग्य को भी बड़ी सहजता से कह जाते थे

''अपनापन का मतवाला था
भीड़ो में भी मैं खो न सका
चाहे जिस दल में मिल जाऊं
इतना सस्ता मैं हो ना सका।''१६

एक–एक शब्द जहां व्यंगात्मकता लिए हुए हैं, वहीं न तो भाषा में दुरुहता आती है और न हीं कहीं शैली भाव में बाधक बनी है। वस्तु तरू भाषा की सरसता – सरलता ही काव्य का प्राण तत्व है, जो संवेदनाओं को सरलता से संप्रेषणीय बनाता है। 'नेपाली' इसी सहज संप्रेषणीयता के संवेदनशील कवि हैं। इस संदर्भ में 'दिनकर' लिखते हैं – "अच्छा काव्य सदैव श्रोता या पाठक – वर्ग के द्वारा सुनते या पढ़ते ही सराहा जाता है और ऐसे ही कवि की कविता चिरकाल तक जीवित भी रहती है।''१७

निश्चित ही सरल– सहज काव्य ही पाठक– श्रोता के द्वारा सराहा जाता है, क्योंकि भाषा की दुरूहता, कथ्य की संप्रेषणीयता में बाधक होती है, साधक नहीं।

निष्कर्षतः 'नेपाली' के कृतित्व में संवेदनात्मक और कलात्मक दोनों स्तर पर ही लोकप्रियता के तत्वों का निर्वाह दृष्टिगोचर होता है। दोनों पक्षों का अध्ययन करने के पश्चात कहा जा सकता है कि नेपाली ने काव्य में कथ्यात्मक स्तर पर ऐसे शाश्वत विषयों को अपनी अनुभूति की प्रकृति से श्रृंगारित किया है, जो मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी होने के कारण कालजयी महत्व रखती है। उनके काव्य में सरलता, सरसता, छंदबद्धता एवं लयात्मकता के कारण स्मरणीयता का गुण स्वयंमेव समाहित हो गया है। कवि का काव्य जनसामान्य से लेकर काव्य विशेषज्ञों तक को एक साथ स्पंदित करने वाली भाषा से युक्त है। इन सभी के साथ नेपाली के स्वर की प्रभावना भी उन्हें लोकप्रियता दिलाने में अहम रही है। अतः गोपाल सिंह 'नेपाली 'में एक गीत कवि के साहित्यिक धर्म का निर्वाह दृष्टिगोचर होता है जो उनके कृतित्व को व्यापकता, मूल्यवत्ता एवं लोकप्रिय प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- William] Raymond— Key words (A vocabulary of culture and society), OÛford University press, New York (USA), Edition —1976

2. पाण्डेय, मैनेजर, 'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका', पृ. 98, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, संस्करण – 2006

3. बाली, प्रो. तारकनाथ,' साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश', पृ.267, संस्करण 1992

4. पाण्डेय, मैनेजर, 'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका', पृ. 310– 311, हरियाणा साहित्य अकादमी, संस्करण 2006

5. दिनकर, रामधारी सिंह,' काव्य की भूमिका', पृ. 16, प्रथम संस्करण 1958

6. संजय कुमार 'पंकज' कृत लेख, 'स्थायी रचनात्मक मूल्यवत्ता का कवि नेपाली', (सं. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र,' परिषद –पत्रिका', अंक 1– 4, अप्रैल, 1999 से मार्च 2000), पृ. 189

7. दिनकर, रामधारी सिंह–' काव्य की भूमिका', पृ. 9, प्रथम संस्करण 1958

8. 'नेपाली,' सविता सिंह (सं.), 'गोपाल सिंह नेपाली– समग्र (भाग 1), गोपाल सिंह नेपाली फाउंडेशन, पृ. 93, संस्करण 2010

9. वही, पृ. 139

10. वही, पृ 129

11. वही, पृ.562

12. वही, पृ.543

13. 'नेपाली', सविता सिंह, डॉ. (सं.), 'मेरी रही कहानी केवल', पृ. 19, प्रथम संस्करण 2012

14. 'नेपाली', सविता सिंह (सं.) गोपाल सिंह नेपालीकृ समग्र (भाग 1) पृ 638 संस्करण 2010

15. वही, पृ. 180

16. वही, पृ. 610

17. दिनकर, रामधारी सिंह, – 'कवि और कविता', पृ. 37, संस्करण 2008

❖◆❖